# काय चिकित्सा – 1

## कामला रोग में किराताद्य चूर्ण का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. महेन्द्र कुमार त्रिवेदी |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. अजय कुमार शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1991 |

जयपुर एवं देश के कई भागों में कामला रोग की विकट समस्या एवम् आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कम प्रभावी होने के कारण आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति के द्वारा इस रोग के निवारण हेतु प्रस्तुत विषय का चयन शोध प्रबन्ध हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु 16 आतुरों का चयन किया गया, जिन्हें किराताद्यचूर्ण (च0चि0 15/137–140) 5–5 ग्राम की मात्रा में जल या मधु से दिन में दो बार दिया गया । औषध प्रयोग अवधि 30 दिन रखी गई ।

16 आतुरों में से 12 कोष्ठाश्रित कामला के (75 प्रतिशत) आतुरों में से 4 को पूर्ण लाभ, 7 को पर्याप्त लाभ एवम् 1 को कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ । शाखाश्रित कामला के 4 आतुरों में से पूर्ण एवम् पर्याप्त लाभ किसी को नहीं हुआ । यह औषध Serum bilirubin को महत्वपूर्ण परिमाण में कम करने में समर्थ है । Urinary urobilinogen को भी कम करने में यह औषध समर्थ है, किन्तु Urinary bilirubin (Bile salt) को कम करने में यह औषध विशेष लाभकारी नहीं है ।

# काय चिकित्सा – 2

## तमक श्वास में शोधनोत्तर श्वासकालेश्वर रस का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. सुन्दर लाल जोशी

**निर्देशक** : प्रो. मदन गोपाल शर्मा

**वर्ष** : 1991

वायु प्रदूषण के कारण दिन प्रतिदिन श्वास रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। आचार्य चरक ने तमक श्वास में संशोधन का विशेष महत्व बताया है । अतः इस शोध प्रबन्ध के अंतर्गत तमक श्वास में संशोधन का महत्व व शोधनोत्तर श्वासकालेश्वर रस का चिकित्सात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

इस अध्ययन में तमक श्वास के चयनित 60 रुग्णों को तीन वर्गों में (प्रत्येक वर्ग में 20 रोगी) विभाजित किया गया।

1. वर्ग 'अ' में शोधन (वमन, विरेचन) के पश्चात् श्वासकालेश्वर रस (वृ. निघण्टुरत्नाकर भाग–3, श्वास कर्म विपाक पृ. 628) 250 मि.ग्रा. की मात्रा में प्रातः, सायं आर्द्रक रस व मधु के अनुपान से प्रयोग किया गया ।
2. वर्ग 'ब' में बिना शोधन के श्वासकालेश्वर रस का प्रयोग किया गया ।
3. वर्ग 'स' में आधुनिक औषध डेरीफाइलिन का प्रयोग किया गया ।

औषध प्रयोग अवधि सभी वर्गों में 6 सप्ताह रखी गई ।

उपरोक्त तीनों वर्गों में वर्ग 'अ' के रुग्णों में अन्य वर्ग की अपेक्षा उत्तम परिणाम प्राप्त हुए ।

# काय चिकित्सा – 3

## मधुमेह व्याधि पर मधुमेहहर वटी एवं दार्व्यादि क्वाथ का तुलनात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. सुनीता जैन

**निर्देशक** : प्रो. मदन गोपाल शर्मा

**वर्ष** : 1991

मधुमेह रोगियों की बढ़ती हुई संख्या एवं इसमें प्रयुक्त होने वाली एलौपैथिक दवाओं के अत्यधिक दुष्प्रभावों को देखते हुए दो शास्त्रीय योग मधुमेहहर वटी एवं दार्व्यादि क्वाथ के पुनर्मूल्यांकन हेतु शोध अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में 36 मधुमेह रोगियों को 3 वर्गों में (प्रत्येक वर्ग में 12) विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग के रोगियों को मधुमेहहर वटी (सिद्धप्रयोगलतिका 18/67) 4 ग्राम जल अनुपान से प्रातः सायं भोजन पूर्व, द्वितीय वर्ग में मधुमेहहर वटी 2 ग्राम तथा दार्व्यादि क्वाथ (च0चि0 6/26) 10 मि.लि. प्रातः, सायं भोजन पूर्व एवं तृतीय वर्ग में केवल दार्व्यादि क्वाथ 10 मि.लि. प्रातः, सायं भोजन पूर्व दिया गया । अध्ययन की अवधि 60 दिन रही ।

औषध के प्रभाव के निर्धारण हेतु प्रत्येक रोगी की रक्त परीक्षा के अन्तर्गत TLC, DLC, ESR, Hb%, FBS, PPBS एवं मूत्र परीक्षण किया गया ।

द्वितीय वर्ग के रोगियों में सर्वाधिक लाभ (83.34 प्रतिशत), प्रथम वर्ग के रोगियों में मध्यम लाभ (73.20 प्रतिशत) एवं तृतीय वर्ग के रोगियों में न्यूनतम लाभ (70.37 प्रतिशत) देखा गया ।

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मधुमेहहर वटी एवं दार्व्यादि क्वाथ मधुमेह रोग में प्रभावकारी है एवं इनका एक साथ प्रयोग अत्यन्त उपयोगी है।

## काय चिकित्सा – 4

### तमक श्वास में मनःशिलादि घृत की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. कृष्ण चन्द्र शर्मा

**निर्देशक** : प्रो. मदन गोपाल शर्मा

**वर्ष** : 1992

संशोधन उपरान्त द्रव्य की कार्मुकता बढ़ जाती है या नहीं यह सिद्ध करने के लिए तमक श्वास में मनःशिलादि घृत की कार्मुकता का अध्ययन करने के उद्देश्य से महानिबन्ध का विषय चयनित किया गया है ।

इस अध्ययन हेतु 40 आतुरों का चयन कर उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' में संशोधनोपरान्त मनःशिलादि घृत (च0चि0 17/145) का 2½ ग्राम मात्रा में प्रातः, सायं प्रयोग करवाया गया, वर्ग 'ब' में संशोधन बिना मनःशिलादि घृत का प्रयोग करवाया गया तथा वर्ग 'स' में संशोधन उपरान्त पथ्य सेवन करवाया गया । औषध प्रयोग अवधि 7 सप्ताह रखी गई ।

वर्ग 'अ' में उत्तम लाभ 80 प्रतिशत एवम् मध्यम लाभ 20 प्रतिशत रहा । वर्ग 'ब' में उत्तम लाभ 30 प्रतिशत एवम् मध्यम तथा अल्पलाभ 35–35 प्रतिशत रहा । वर्ग 'स' में मध्यम तथा अल्पलाभ 50–50 प्रतिशत रहा ।

# काय चिकित्सा – 5

## सक्षौद्रं ग्रथिते रक्ते लिह्यात् पारावतं शकृत् (पक्षाघात के परिप्रेक्ष्य में)

**अध्येता** : डा. सत्येन्द्र नारायण ओझा
**निर्देशक** : प्रो. मदन गोपाल शर्मा
**सह–निर्देशक** : डा. विजय सिंह
**वर्ष** : 1992

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ग्रथित रक्त के कारण उत्पन्न पक्षाघात में पारावत शकृत् का मधु के साथ प्रयोग करवाकर उसकी कार्मुकता का चिकित्सकीय अध्ययन किया गया है । इसके साथ ही पारावत शकृत् का Antithrombolitic effect जान्तव प्रयोग द्वारा सिद्ध किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में पक्षाघात से पीडित 30 आतुरों का चयन कर उन्हें तीन वर्गों में विभाजित कर प्रथम वर्ग में आतुरों को पारावत शकृत् के 2 कैप्सूल (500 मि.ग्रा. प्रति कैप्सूल) दिन में 3 बार मधूदक (1 लिटर जल + 50 मि.लि. मधु से निर्मित) के साथ, द्वितीय वर्ग में पारावत शकृत् कैप्सूल मधूदक एवम् दशमूल क्वाथ (10 ग्राम औषध से निर्मित) के साथ तथा तृतीय वर्ग में आतुरों को केवल मधूदक एवम् दशमूल क्वाथ दिया गया । औषध प्रयोग अवधि 60 दिन रखी गई ।

प्रथम वर्ग में पूर्ण लाभ 10 प्रतिशत, पर्याप्त लाभ 70 प्रतिशत तथा आंशिक एवं अलाभ 10–10 प्रतिशत रहा। द्वितीय वर्ग में पूर्ण लाभ 10 प्रतिशत, पर्याप्त लाभ 70 प्रतिशत एवं अलाभ 20 प्रतिशत रहा। तृतीय वर्ग में आंशिक एवं अलाभ 50–50 प्रतिशत रहा।

इस प्रकार औषध की कार्मुकता प्रतिषेधात्मक रुप में 20 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. एवम् चिकित्सात्मक वर्ग में 5 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. तक प्राप्त हुई । Heparin के साथ तुलनात्मक अध्ययन में प्रतिषेधात्मक रुप में दोनों का प्रभाव समान परिलक्षित हुआ। चिकित्सात्मक वर्ग में जहाँ Heparin कार्मुक नहीं रही वहीं पारावत शकृत् की कार्मुकता सांख्यिकीय विश्लेषण से अति सार्थक प्राप्त हुई ।

# काय चिकित्सा – 6

## पक्षाघात रोग में वातराक्षस रस एवं चरकोक्त संशोधन कर्म का तुलनात्मक चिकित्सकीय अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. परमानन्द उपाध्याय |
| **निर्देशक** | : | प्रो. मदन गोपाल शर्मा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. राधेश्याम शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1993 |

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वात दोष प्रवृद्धि मूलक मनुष्य को विकलांग करने वाली तथा सामान्य जीवन से विमुख करने वाली घोर व्याधि पक्षाघात पर वातराक्षस रस एवम् चरकोक्त पक्षाघात के चिकित्सा सिद्धान्त की कार्मुकता का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 23 आतुरों का चयन कर उन्हें 3 वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में 9 आतुर लिए गए एवम् उन्हें वातराक्षस रस (वृहत् योगतरंगिणी वातव्याधिरोगाधिकार) 250 मि.ग्रा. की दो मात्रा प्रतिदिन शहद से दी गई एवम् इसी वर्ग में शामिल बालकों को 125 मि.ग्रा. की दो मात्रा प्रतिदिन शहद से दी गई। द्वितीय वर्ग में 7 आतुर लिए गए एवम् उन्हें संशोधन तथा व्यायाम के साथ उपर्युक्त औषध दी गई। चरकोक्त संशोधन कर्म 'स्वेदनं स्नेहसंयुक्ते पक्षाघाते विरेचनम्' इस सिद्धान्तानुसार इस वर्ग में महानारायण तैल से अभ्यंग, दशमूल क्वाथ से वाष्पस्वेदन तथा महानारायण तैल से अनुवासन बस्ति एवम् एरण्डमूलादि निरुह बस्ति दी गई । तृतीय वर्ग में भी 7 आतुरों का चयन किया गया एवम् उन्हें उपर्युक्त प्रकार से संशोधित कर व्यायाम करवाया गया । औषध सेवन अवधि 3 माह रखी गई ।

द्वितीय वर्ग में 42.8 प्रतिशत में पूर्ण लाभ एवम् 57.2 प्रतिशत में पर्याप्त लाभ देखा गया । इससे कम लाभ प्रथम वर्ग में देखने को मिला जहाँ 11.2 प्रतिशत में पूर्ण लाभ तथा 44.4 प्रतिशत में पर्याप्त लाभ देखा गया । सबसे कम लाभ तृतीय वर्ग में देखने को मिला जहाँ आंशिक लाभ तथा अलाभ 86 प्रतिशत रोगियों में एवम् पर्याप्त लाभ मात्र 14 प्रतिशत रोगियों में देखा गया ।

# काय चिकित्सा – 7

## आमवात पर मेथीपाक का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. धर्म प्रकाश आर्य

**निर्देशक** : प्रो. मदन गोपाल शर्मा

**वर्ष** : 1994

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्‌देश्य आमवात व्याधि की सम्प्राप्ति विघटन में मेथीपाक की कार्मुकता सिद्ध करना है ।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया, जिन्हें दो वर्ग – वर्ग 'अ' एवम् वर्ग 'ब' में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' में 15 आतुरों को प्रथम 3, 5, 7 दिनों तक लंघन करवाया गया, तत्पश्चात् रुक्षस्वेदन (बालुकास्वेद) करवाकर मेथीपाक (वृ. निघण्टुरत्नाकर, आमवातकर्मविपाक) 25 ग्राम प्रातः, सायं दिया गया । चिकित्सा पश्चात् 1–3 दिनों तक निरुह बस्ति का प्रयोग करवाया गया ।

वर्ग 'ब' में मेथीपाक 25 ग्राम प्रातः, सायं प्रयोग करवाया गया ।

अनुपान उष्ण दुग्ध अथवा उष्ण जल दिया गया तथा प्रयोग अवधि एक माह तक रखी गई ।

प्रयोगशालीय परीक्षण में रक्त परीक्षण (TLC, DLC, ESR, Hb%, RA Factor) एवं मूत्र परीक्षण (Routine & Microscopic) करवाया गया ।

निष्कर्ष के रुप में वर्ग 'अ' में उत्तम लाभ 6 आतुरों में, सामान्य लाभ 9 आतुरों में, वर्ग 'ब' में उत्तम लाभ 2 आतुरों में, सामान्य लाभ 6 आतुरों में, अल्प लाभ 5 आतुरों में तथा अलाभ 2 आतुरों में प्राप्त हुआ ।

# काय चिकित्सा – 8

## प्रवाहिका में शतपुष्पादि अनुवासन बस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन


| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. कल्याण प्रसाद मीणा |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. चन्द्रभानु शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1994 |


वर्तमान में जठराग्निमांद्य से उत्पन्न होने वाली महास्रोतोगत व्याधियों में प्रवाहिका भी एक प्रमुख व्याधि है, इस हेतु सर्व सुलभ एवम् अल्प व्यय साध्य शतपुष्पादि अनुवासन बस्ति का अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शतपुष्पादि अनुवासन बस्ति (चरक चिकित्सा 19/62) का प्रयोग 50 मि.लि. – 75 मि.लि. की मात्रा में 30 दिनों तक कुल 20 आतुरों में किया गया ।

शतपुष्पादि अनुवासन बस्ति से 55 प्रतिशत रोगियों में उत्तम लाभ एवम् 35 प्रतिशत रोगियों में सामान्य लाभ प्राप्त हुआ । 10 प्रतिशत रोगियों में चिकित्सोपरान्त कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ ।

# काय चिकित्सा – 9

## आमवात में स्वेदन एवं बस्ति कर्म की कार्मुकता

**अध्येता** : डा. कमल सिंह खितौलिया

**निर्देशक** : वैद्य बनवारी लाल मिश्रा

**सह–निर्देशक** : डा. चन्द्रभानु शर्मा

**वर्ष** : 1994

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रयोगात्मक अध्ययन हेतु आमवात रोग से ग्रस्त रोगियों में प्रयोगार्थ स्वेदन एवम् बस्ति कर्म का चयन किया गया ।

स्वेदनार्थ दशमूलादि योग (कल्पित, घटक द्रव्य – दशमूल, एरण्ड मूल त्वक्, शिग्रु मूल त्वक्, पुनर्नवा एवं निर्गुण्डी पत्र) एवम् बस्ति कर्म के लिए अनुवासन बस्ति हेतु वृ0 सैन्धवादि तैल (भैषज्यरत्नावली 29/222–227), निरुह बस्ति हेतु एरण्डमूलादि निरुह बस्ति (च0सि0 3/ 38–42) का चयन किया गया।

इस अध्ययन हेतु अंतरंग विभाग से 22 एवम् बहिरंग विभाग से 8 आतुरों का चयन किया गया । आतुरों को दो वर्गों – वर्ग 'अ' एवम् वर्ग 'ब' में विभाजित किया गया ।

वर्ग 'अ' के 10 आतुरों में अश्वगन्धा चूर्ण कैप्सूल (250 मि.ग्रा.) प्रातः, सायं उष्णोदक अनुपान से दिया गया । वर्ग 'ब' के 20 आतुरों में स्वेदन एवं बस्ति दी गई।

औषध प्रयोग अवधि 30 दिन रखी गई ।

वर्ग 'अ' के आतुरों में कोई भी लाभ नहीं हुआ एवम् वर्ग 'ब' के आतुरों में पर्याप्त लाभ पाया गया, जिसमें उत्तम लाभ 6 आतुरों में (30 प्रतिशत), सामान्य लाभ 11 आतुरों में (55 प्रतिशत) तथा अलाभ 3 आतुरों में (15 प्रतिशत) पाया गया ।

इस प्रकार अनुवासन बस्ति हेतु वृ0 सैन्धवादि तैल एवम् एरण्डमूलादि निरुह बस्ति के साथ–साथ दशमूलादि योग द्वारा वाष्प स्वेदन की आमवात व्याधि में कार्मुकता सिद्ध होती है ।

# काय चिकित्सा – 10

## श्लैष्मिक ग्रहणी रोग पर वमनपूर्वक पलाशादि पानीय एवं यवागू प्रयोग के प्रभावों का अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. रामकिशोर जोशी |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. रमाकान्त शर्मा (चूलेट) |
| **वर्ष** | : | 1995 |

ग्रहणी रोग का दोष–दूष्य सम्मूर्च्छना जनित विकृति परक अन्वेषणात्मक अध्ययन एवं श्लैष्मिक ग्रहणी रोग में प्रतिपादित चरकोक्त चिकित्सा सिद्धान्त की कार्मुकता का अध्ययन करना ही प्रस्तुत महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रस्तुत शोध हेतु 35 आतुरों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया। स्नेहन, स्वेदन पश्चात् वर्ग 'अ' के 3 आतुरों को वमन करवाकर पलाशादि पानीय (च.चि. 15/142–143) 50 ग्राम को क्वाथ विधि से तैयार कर दिया गया तथा पलाशादि पानीय से सिद्ध यवागू का प्रयोग करवाया गया । वर्ग 'ब' के 32 आतुरों को केवल पलाशादि पानीय तथा उपरोक्त यवागू का प्रयोग करवाया गया । औषध प्रयोग अवधि न्यूनतम एक माह रखी गई ।

प्रथम वर्ग 'अ' के आतुरों को 65 से 70 प्रतिशत लाभ तथा द्वितीय वर्ग 'ब' के आतुरों को 60 से 65 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

# काय चिकित्सा – 11

## आमवात पर आमगजसिंह मोदक का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. जागेश्वर प्रसाद चौरसिया |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. दयाशंकर मिश्रा |
| **वर्ष** | : | 1995 |

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जन सामान्य में पाई जाने वाली व्याधि आमवात पर शास्त्रीय योग आमगजसिंह मोदक की कार्मुकता का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु 50 रोगियों का चयन किया गया तथा उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया।

वर्ग 'अ' में बिना शोधन आमगजसिंह मोदक (भैषज्यरत्नावली 29/127–134) का प्रयोग किया गया तथा वर्ग 'ब' में शोधन पश्चात् आमगजसिंह मोदक का प्रयोग किया गया ।

औषध मात्रा – 10 से 20 ग्राम प्रातः, सायं

अनुपान – उष्णोदक

औषध प्रयोग अवधि – 1½ माह

चिकित्सा परिणाम का निर्धारण रोगियों में उपस्थित लक्षणों की तीव्रता में चिकित्सोपरान्त कमी के आधार पर किया गया । इसके अनुसार वर्ग 'अ' के रोगियों में आमगजसिंह मोदक का औसत लाभ 52 प्रतिशत एवम् वर्ग 'ब' के रोगियों में आमगजसिंह मोदक का औसत लाभ 56.3 प्रतिशत रहा ।

# काय चिकित्सा – 12

## श्वेत प्रदर रोग में मधुकाद्यवलेह एवं तक्र बस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. नम्रता सातपुते

**निर्देशक** : वैद्य बनवारी लाल मिश्रा

**सह–निर्देशक** : डा. गीता शर्मा

**वर्ष** : 1996

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में स्त्रियों में पाई जाने वाली विशिष्ट व्याधि श्वेत प्रदर में मधुकाद्यवलेह एवम् तक्र बस्ति की कार्मुकता का अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध हेतु 60 रोगियों का चयन किया गया तथा उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया ।

वर्ग 'अ' – मधुकाद्यवलेह (घटक द्रव्य – मुलेठी, रक्त चन्दन, लाक्षा, रक्त कमल आदि 25 द्रव्यों की अवलेह कल्पना) का प्रयोग 1 तोला मात्रा में प्रातः, सायं उष्ण दुग्ध से

वर्ग 'ब' – तक्र उत्तरबस्ति (तक्र 250 मि.लि. + त्रिफला क्वाथ 250 मि.लि.) का प्रयोग

वर्ग 'स' – मधुकाद्यवलेह व तक्र उत्तरबस्ति का प्रयोग

प्रयोग अवधि – 1 माह

वर्ग 'अ' में औषध, योनि से श्वेत वर्ण स्राव लक्षण पर सर्वाधिक 65 प्रतिशत कार्यकारी तथा न्यूनतम कार्यकारी 40 प्रतिशत चिड़चिड़ापन लक्षण पर रही । वर्ग 'ब' में औषध, योनि से श्वेत वर्ण स्राव, लसदार स्राव, कटिशूल इन तीनों पर समान रुप से 50 प्रतिशत कार्यकारी रही । वर्ग 'स' में औषध, योनि स्राव पर सर्वाधिक 75 प्रतिशत कार्यकारी तथा योनि कण्डू लक्षण पर न्यूनतम 46.66 प्रतिशत कार्यकारी रही ।

श्वेत प्रदर में शोध कार्य हेतु चयनित मधुकाद्यवलेह तथा तक्र बस्ति का परिणाम सर्वश्रेष्ठ रहा।

# काय चिकित्सा – 13

## उच्चरक्तचाप में चन्द्रकला रस का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. अर्जुन सिंह चारण |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. राधेश्याम शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1996 |

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उच्चरक्तचाप का आयुर्वेदीय पक्ष एवम् उसकी आयुर्वेद के सन्दर्भ में विस्तृत विवेचना (सम्प्राप्ति, दोष–दूष्य, निदान, इत्यादि) तथा उस पर चन्द्रकला रस की कार्मुकता का अध्ययन किया गया है ।

इस शोध कार्य हेतु 50 आतुरों का चयन किया गया । प्रत्येक आतुर को औषध रूप में चन्द्रकला रस (रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोगसंग्रह, प्रथम खण्ड) की 2 गोली प्रातः, सायं 45 दिनों तक सुखोष्ण जल से सेवन करवाई गई।

अनुसन्धानार्थ कुल गृहीत 50 आतुरों में से पूर्ण लाभ 22 प्रतिशत आतुरों को, पर्याप्त लाभ 52 प्रतिशत आतुरों को तथा अल्प लाभ 26 प्रतिशत आतुरों को मिला ।

# काय चिकित्सा – 14

## अश्वामलकी योग का कार्श्य रोग पर रसायन प्रभाव एक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. शंकर लाल जाट |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. अजय कुमार शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1996 |

धातुक्षयजोत्पन्न कार्श्य रोग की सम्प्राप्ति विघटन एवम् अश्वामलकी योग का कार्श्यरोग पर रसायन प्रभाव का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रस्तुत शोध हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया । प्रत्येक आतुर को शोधन के रुप में त्रिफला चूर्ण रात्रि को सोते समय उष्ण जल से तीन ग्राम की मात्रा में देकर शुद्धि कराई गई, संशोधनोपरान्त आतुरों को अश्वामलकी योग (कल्पित, घटक द्रव्य – अश्वगन्धा, आमलकी, दुग्ध, शर्करा तथा घृत) 10 ग्राम की मात्रा में प्रातः, सायं दुग्ध के साथ सेवन करवाया गया । औषध प्रयोग अवधि 2 माह रखी गई ।

प्रस्तुत शोध कार्य में गृहीत आतुरों में से सभी को मध्यम लाभ प्राप्त हुआ तथा लाभ का प्रतिशत 40.44 रहा ।

# Kaya Chikitsa - 15

## Cervical Spondylosis - Ayurvedic diagnosis and its management by Panca Karma Therapy with special reference to Abhyanga, Swedana and Nasya Karma

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Anil Kumar Singh Bhadoria |
| **Guide** | : | Vd. Banwari Lal Mishra |
| **Co-Guide** | : | Dr. R.K. Sharma (Chulet) |
| **Year** | : | 1996 |

The Present trial was carried out to assess the efficacy of Panca Karma therapy with special reference to Abhyanga and Nasya Karma by Karpasasthyadi Taila along with the Swedana by Nirgundi patra and suitable ayurvedic diagnosis of this disease be formed.

For this study 15 patients were selected and divided into two groups. Group I patients were given Snehana with Karpasasthyadi Taila (Sahasrayoga, Vata Vikara) and Nirgundi patra Nadi Sweda. Group II patients were given Karpasasthyadi Taila Snehana and Swedana with Nirgundi patra along with Nasya. The duration of each karma was decided for seven days.

86.7% patients in group II and 80.2% patients in group I were relieved of the symptom of neck pain. The radiation of pain was reported to be relieved in 93.04% patients of group II and 73.4% patients of group I. In paraesthesia 90.1% patients of group II and 66.7% patients of group I showed relief.

## काय चिकित्सा – 16

### अम्लपित्त में शोधनोपरान्त (वमन व विरेचन) दशांग क्वाथ का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. अनिल कुमार गुप्ता |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. अजय कुमार शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1997 |

अम्लपित्त व्याधि की सस्ती, सुलभ एवम् उपयोगी चिकित्सा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध कार्य में दशांग क्वाथ का प्रयोग किया गया एवम् उसका चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया ।

इस शोध कार्य हेतु 30 आतुरों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' में आतुरों को संशोधनोपरान्त (वमन, विरेचन) दशांग क्वाथ (चक्रदत्त 52/11) 8 तोला की मात्रा में दिन में दो बार प्रयोग करवाया गया तथा वर्ग 'ब' के आतुरों को बिना संशोधन करवाए उपर्युक्त मात्रा में दशांग क्वाथ का सेवन करवाया गया । प्रयोग अवधि 1 माह निर्धारित की गई ।

वर्ग 'अ' में कुल लाभ 92.95 प्रतिशत रहा, जबकि वर्ग 'ब' में कुल लाभ 79.69 प्रतिशत रहा ।

# काय चिकित्सा – 17

## तमक श्वास में वर्धमान पिप्पली का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. राज कुमार पारीक |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य |
| **वर्ष** | : | 1997 |

तमक श्वास के बढ़ते रोगियों की संख्या को देखते हुए व वर्धमान पिप्पली योग में श्वास नाशक गुण जैसे – पाचक, वात कफ नाशक, स्रोतोशोधक, अनुलोमन एवं विरेचन गुण होने से इस योग का अध्ययन हेतु चयन किया गया।

इस शोध हेतु तमक श्वास के 25 रोगियों का चयन किया गया । चयन का आधार तमक श्वास के लक्षणों एवं प्रयोगशालीय परीक्षणों (X-ray, ECG, Spirometery) को बनाया गया । चयनित रोगियों का 2 वर्गों में विभाजन किया गया।

प्रथम वर्ग के 15 रोगियों को बिना शोधन (वमन, विरेचन) के पिप्पली का वर्धमान क्रम से मधु व घृत के साथ सेवन करवाया गया ।

द्वितीय वर्ग के 10 रोगियों को शोधनोपरान्त पिप्पली का वर्धमान क्रम से मधु व घृत के साथ सेवन करवाया गया ।

औषध मात्रा एवं प्रयोग अवधि – रोगी के बल एवं दोष बल के आधार पर प्रतिदिन 3, 5, 7 व 10 पिप्पली से प्रारंभ कर 100 पिप्पली तक आरोही तथा अवरोही क्रम से सेवन कराई गई तथा इन क्रमों में प्रयोग अवधि 66 दिन, 39 दिन, 27 दिन तथा 19 दिन रही ।

प्रथम वर्ग के आतुरों में उत्तम लाभ 46.66 प्रतिशत, मध्यम लाभ 26.66 प्रतिशत व अलाभ 26.67 प्रतिशत प्राप्त हुआ ।

द्वितीय वर्ग के आतुरों में 80 प्रतिशत उत्तम लाभ व 20 प्रतिशत मध्यम लाभ प्राप्त हुआ ।

# काय चिकित्सा – 18

## परिणाम शूल में पिप्पली घृत का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. सीमा सिंह

**निर्देशक** : वैद्य बनवारी लाल मिश्रा

**सह–निर्देशक** : डा. राधेश्याम शर्मा

**वर्ष** : 1997

आधुनिक परिवेश में परिणाम शूल के बढते रोगियों की संख्या को देखते हुए इस रोग में पिप्पली घृत की कार्मुकता के अध्ययन हेतु विषय चयनित किया गया है।

इस शोध कार्य हेतु 23 आतुरों का चयन किया गया एवम् उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' में 10 रोगी लिए गए जिन्हें चक्रदत्त में प्रतिपादित चिकित्सासूत्रानुसार शोधन पश्चात् पिप्पली घृत (चक्रदत्त 27/26) का प्रयोग करवाया गया एवम् वर्ग 'ब' में बिना संशोधन करवाए पिप्पली घृत का प्रयोग करवाया गया । प्रयोग अवधि 1 माह निर्धारित की गई । पिप्पली घृत की मात्रा 5 ग्राम एवम् अनुपान सुखोष्ण दुग्ध रखा गया ।

वर्ग 'अ' के आतुरों में 80 प्रतिशत रोगियों को लाभ प्राप्त हुआ तथा वर्ग 'ब' के आतुरों में 38 प्रतिशत रोगियों को लाभ प्राप्त हुआ ।

# काय चिकित्सा – 19

## स्थौल्य रोग के परिप्रेक्ष्य में लेखन वटी एवं लेखन बस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. महेश कुमार स्वामी

**निर्देशक** : वैद्य बनवारी लाल मिश्रा

**सह–निर्देशक** : डा. दया शंकर मिश्रा

**वर्ष** : 1997

जन सामान्य में बहुधा पाई जाने वाली बहूपद्रव व्याधि स्थौल्य की गम्भीरता को देखते हुए प्रस्तुत विषय का चयन शोध प्रबन्ध हेतु किया गया ।

प्रस्तुत शोध हेतु 24 आतुरों का चयन किया गया एवम् उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' में 12 आतुरों को लेखन वटी (सुश्रुत सू. 15/38 में वर्णित द्रव्यों से निर्मित) 2–2 गोली (500 मि.ग्रा. प्रति गोली) दिन में 3 बार उष्णोदक से तथा लेखन बस्ति (च.चि. 38/81) का प्रयोग करवाया गया । वर्ग 'ब' में 12 आतुरों को केवल लेखन बस्ति का प्रयोग करवाया गया । औषध प्रयोग अवधि 3 माह रही ।

वर्ग 'अ' के आतुरों में उत्तम लाभ 75 प्रतिशत व मध्यम लाभ 25 प्रतिशत प्राप्त हुआ । वर्ग 'ब' के आतुरों में उत्तम लाभ 25 प्रतिशत तथा मध्यम लाभ 75 प्रतिशत प्राप्त हुआ ।

चयनित वर्ग 'अ' में लक्षणों की तीव्रता में उत्तम लाभ 60 प्रतिशत, मध्यम लाभ 26.67 प्रतिशत, अलाभ 13.13 प्रतिशत रहा ।

# काय चिकित्सा – 20

## पाण्डुरोग में मण्डूरवटक का चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. आशा |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. रमाकान्त शर्मा (चूलेट) |
| **वर्ष** | : | 1997 |

रस, रक्तक्षय एवम् पाण्डुरोग में जन्यजनकत्व, जनकजन्यत्व तथा अन्योन्याश्रयित्व सम्बन्ध का ज्ञान करने के लिए पाण्डु रोग में मण्डूर वटक का अध्ययन हेतु चयन किया गया ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया एवम् उन्हें मण्डूर वटक (चरक चि. 16/102–104) 1 ग्राम दिन में 2 बार तक्र के साथ 30 दिन तक प्रयोग करवाया गया ।

इस अध्ययनानुसार नष्टाग्नित्व, दौर्बल्य, श्रम, अंगमर्द, ष्ठीवन, अल्परक्तत्व, अल्पमेदत्व, निःसारत्व, हृदय द्रवत्व, कार्श्य, बलक्षय, पाण्डुत्व, पारुष्य, अनन्नाभिनन्दन, त्वक्, मूत्र, नेत्र एवं नख पीतत्व तथा पीतवर्णत्व लक्षण शत प्रतिशत आतुरों में उपलब्ध पाए गए तथा चिकित्सा पश्चात् लक्षणों में क्रमशः 43.33 प्रतिशत, 50 प्रतिशत, 40 प्रतिशत, 40 प्रतिशत, 0 प्रतिशत, 30 प्रतिशत, 36.66 प्रतिशत, 33.33 प्रतिशत, 46.66 प्रतिशत, 3.33 प्रतिशत, 0 प्रतिशत, 0 प्रतिशत, 50 प्रतिशत, 33.35 प्रतिशत, 0 प्रतिशत, 50 प्रतिशत, 16.66 प्रतिशत लाभ पाया गया ।

# काय चिकित्सा – 21

## गृध्रसी रोग में रास्नादि गुग्गुलु का अनुपान भेद से चिकित्सात्मक अध्ययन

| | | |
|---|---|---|
| **अध्येता** | : | डा. सुशील कुमार राणा |
| **निर्देशक** | : | वैद्य बनवारी लाल मिश्रा |
| **सह–निर्देशक** | : | डा. चन्द्रभानु शर्मा |
| **वर्ष** | : | 1998 |

गृध्रसी रोग में रास्नादि गुग्गुलु का विभिन्न अनुपान भेद से प्रयोग कर उसकी कार्मुकता का अध्ययन करना ही इस शोध प्रबन्ध का उद्देश्य है ।

इस अध्ययन हेतु 40 आतुरों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' के आतुरों को रास्नादि गुग्गुलु (भा.भै. रत्नाकर, चतुर्थ भाग) उष्णोदक के अनुपान से दिया गया । वर्ग 'ब' के आतुरों को रास्नादि गुग्गुलु, निर्गुण्डी पत्र क्वाथ (40–50 मि.लि.) के साथ दिया गया । रास्नादि गुग्गुलु का एक से दो ग्राम मात्रा में दिन में दो बार अधिकतम 30 दिनों तक प्रयोग करवाया गया ।

वर्ग 'अ' के आतुरों में 45 प्रतिशत को उत्तम लाभ, 20 प्रतिशत को मध्यम लाभ तथा 15 प्रतिशत को अल्प लाभ प्राप्त हुआ । वर्ग 'ब' के आतुरों में 65 प्रतिशत को उत्तम लाभ, 20 प्रतिशत को मध्यम लाभ और 15 प्रतिशत को अल्प लाभ प्राप्त हुआ । इस प्रकार रास्नादि गुग्गुलु उष्णोदक अनुपान की अपेक्षा निर्गुण्डी पत्र क्वाथ के अनुपान के साथ प्रयोग करने पर अधिक सार्थक सिद्ध हुई ।

# काय चिकित्सा – 22

## मधुमेह रोग में पलाशपुष्पादि चूर्ण का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. मुन्ना लाल प्रजापति

**निर्देशक** : प्रो. सी.एच.एस. शास्त्री

**सह–निर्देशक** : डा. अजय कुमार शर्मा

**वर्ष** : 1998

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मधुमेह रोग की कृच्छ्रसाध्यता एवम् निरन्तर बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए मधुमेह रोग (आईडीडीएम और एनआईडीडीएम) में पलाशपुष्पादि चूर्ण का चिकित्सात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 30 आतुरों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में विभाजित कर वर्ग 'अ' के आतुरों (Non Insulin Dependent Diabetes Mellitus) में पलाशपुष्पादि चूर्ण (कल्पित, घटक द्रव्य – पलाश पुष्प 4 भाग, निम्ब पत्र, बिल्व पत्र, कारवेल्लक, तुलसी पत्र 1–1 भाग) का प्रयोग एवम् पथ्य सेवन तथा वर्ग 'ब' के आतुरों (Insulin Dependent Diabetes Mellitus) में पलाशपुष्पादि चूर्ण का प्रयोग एवम् पथ्य सेवन कराने का निर्धारण किया गया ।

Non Insulin Dependent Diabetes Mellitus वर्ग में 23 रोगी उपलब्ध हुए जबकि Insulin Dependent Diabetes Mellitus में एक रोगी भी उपलब्ध नहीं हुआ।

पलाशपुष्पादि चूर्ण को 5 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार सुखोष्ण जल से भोजन के आधा घण्टा पूर्व सेवन करवाया गया। औषध प्रयोग अवधि 2 माह रखी गई।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि मधुमेह के रोगियों में पलाशपुष्पादि चूर्ण के प्रयोग से महत्वपूर्ण लाक्षणिक सुधार, मूत्रगत शर्करा एवम् रक्तगत शर्करा के स्तर में कमी पाई गई । मूत्रगत शर्करा में औसत लाभ 72.37 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

23 रोगियों में चिकित्सा पूर्व औसत रक्तगत शर्करा 272.56 मि.ग्रा./डीएल तथा चिकित्सा पश्चात् औसत रक्त गत शर्करा 201.76 मि.ग्रा./डीएल देखी गई, इस प्रकार 68.49 मि.ग्रा./डीएल की कुल औसत कमी देखी गई । औसत लाभ 25.15 प्रतिशत प्राप्त हुआ ।

# Kaya Chikitsa - 23

## Clinical evaluation of effect of Tagara on Hypertension

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Umesh Shukla |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 1999 |

The present research work was carried out to assess the probable aetiopathogenesis of Hypertension as per ayurvedic principles and to evaluate the clinical effect of Tagara mula churna in Hypertension.

20 patients of Essential Hypertension of various decades of life were selected for the present study. All these 20 patients were given Tagara mula churna in the dose of 5gm b.d. with lukewarm water for 30 to 45 days.

Urine R/M, Blood urea, Serum creatinine and ECG investigations were carried out to evaluate the result.

The clinical trial of Tagara mula churna in mild cases of Essential Hypertension revealed a significant reduction in the level of systolic as well as diastolic blood pressure. No significant changes were observed in moderate, severe and very severe cases of Essential Hypertension. No statistically significant change was observed in biochemical studies (Blood urea & S. creatinine). In most of the cases ECG tracing was found within normal limit before & after treatment. There was a clinical trend of lowering down of pulse rate after the therapy with Tagara mula churna which was statistically insignificant.

# Kaya Chikitsa - 24

## Clinical evaluation of effect of Bala Haritaki (Terminalia chebula) on Serum Cholesterol

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Rajeev Sood |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 1999 |

The present research work was carried out to find out the probable etiopathogenesis of Hypercholesteraemia as per ayurvedic principles and to evaluate clinically the effect of Bala Haritaki on Serum cholesterol.

15 patients were selected on the basis of built, look and weight and divided into two groups. 7 patients having Serum cholesterol within normal range and 8 patients having raised level of Serum cholesterol (i.e. Hyper cholesteraemia). All the patients were given Bala Haritaki in powder form in the dose of 2-3gm b.d. for 4-6 weeks. High dose (5gm b.d) causes loose motion, pain in calf muscles, excessive thirst and weakness.

After the therapy there is significant reduction in the level of Total lipids, Serum triglycerides, Serum cholesterol, Serum LDL and Serum VLDL. Level of Serum HDL was found to be significantly increased after the therapy, but no significant change was noted in bodyweight and adipose tissue thickness at various level.

# Kaya Chikitsa - 25

## Study to evaluate the efficacy of Vasti in Rheumatoid Arthritis (Amavata)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Arun Gupta |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 1999 |

The present research work was carried out to evaluate the efficacy of Vasti alone and in combination with drugs in the management of Rheumatoid Arthritis (Amavata) and to draw a hypothesis regarding the mode of action of Vasti on scientific basis.

30 patients were selected and divided into three groups of 10 patients each. First group was given Shaman chikitsa in the form of Sinhanada Guggulu (Bhaishajya Ratnavali 29/181-189) 1gm with 40ml of sunthi and guduchi kwath twice daily for a period of 1 month along with dry fomentation (Baluka Sweda) locally. Second group was given only Shodhan chikitsa in the from of Vaitaran Vasti (Chakradatta 73/32) along with Anuvasana Vasti with Saindhavadya Taila (Bhaishajya Ratnavali 29/215-221). Vasti chikitsa was given for 30 days according to the Karma Vasti regimen mentioned in Charak Samhita. Third group was treated with both Sodhan and Shaman chikitsa simultaneously.

In third group (Vasti + S.Guggulu) clinical improvement was 59.50%, functional improvement was 29.05% and haematological changes in ESR was 19.74%, where as in second group these are 47.49%, 22.51% and 13.2% respectively. In first group clinical improvement was 32.69%, functional improvement was 11.01% and haematological changes in ESR was 0.02%.

Thus maximum significant result was obtained in 3rd group.

# काय चिकित्सा – 26

## अपस्मार रोग में संशोधनपूर्वक वचा चूर्ण एवं स्मृतिसागर रस का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. उत्तम कुमार शर्मा

**निर्देशक** : डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य

**वर्ष** : 1999

अपस्मार रोग में संशोधन की उपयोगिता एवम् संशोधनोपरान्त संशमन चिकित्सा के प्रभाव का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु 30 आतुरों का चयन किया गया एवम् उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया । प्रत्येक वर्ग में 10 आतुरों को रखा गया । प्रथम वर्ग में वचा चूर्ण 500 मि.ग्रा. मधु से दिन में दो बार दिया गया । द्वितीय वर्ग में स्मृतिसागर रस (योगरत्नाकर, अपस्मारचिकित्सा, पृ. 502) 250 मि.ग्रा. दुग्ध से दिन में दो बार दिया गया । तृतीय वर्ग में स्मृतिसागर रस एवम् वचा चूर्ण मधु से उपर्युक्त मात्रा में दिन में दो बार दिया गया ।

चिकित्सा क्रम निम्न प्रकार रखा गया – (1) प्राक्पाचनसह स्नेहन (आभ्यन्तर) (2) संशोधन वमन, विरेचन व नस्य प्रयोग । (3) संशमन औषध प्रयोग – इसकी अवधि 3 माह रखी गयी ।

अपस्मार में तीक्ष्ण संशोधन पूर्वक दी गई संशमन चिकित्सा अधिक प्रभावकारी है। वचा चूर्ण का प्रभाव अपस्मार के पूर्वरूप एवम् वेगोत्तरकालिक लक्षणों के शमन में अधिक महत्वपूर्ण है । वेग आवृत्ति एवम् वेगकालिक समय में यह कम प्रभावी है ।

स्मृतिसागर रस अपस्मार के पूर्वरूप, वेगकालिक एवम् वेगोत्तरकालिक लक्षणों में अच्छा प्रभावी है, इसका दीर्घकाल तक निरन्तर सेवन करने से वेग आवृत्ति एवम् वेगकालिक समय में महत्वपूर्ण कमी आती है ।

# Kaya Chikitsa - 27

## Evaluation of Rejuvenation effect of Amalaki (Emblica officinalis) in old age

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Kahalekar Dhananjay N. |
| **Guide** | : | Dr. M.K. Shandilya |
| **Co-Guide** | : | Dr. D.S. Mishra |
| **Year** | : | 1999 |

Rasayana therapy is a unique approach enunciated by ayurveda. Acharya Sushruta has defined Rasayana as the method which delays the ageing process. On the basis of this concept the present topic is chosen for research work.

Apperently healthy 10 volunteers were selected of age group 40-60 yrs for the trial having age related disturbances.

The drug Amalaki was used in the form of juice 200 ml daily for 30 days. No anupana was given. Before using the drug Sansodhan was done with the help of Haritkyadi Yog (Cha.Chi. 1/1/25-26) in the dose of 10gm with luke warm water, for 3, 5 or 7 days.

Overall good rejuvenation effect (26% - 50%) was found in six volunteers, followed by better rejuvenation effect (51% - 75%) was found in three volunteers. Mild effect (6% - 25%) was observed in only one volunteer. Excellent rejuvenation effect (76% and above) was not found in any of the volunteer.

# Kaya Chikitsa - 28

## Clinical evaluation of Nasya Karma in Peenasa (Pratishyaya Roga)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Rajiv Kumar Rai |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. K. Govardhan |
| **Year** | : | 2000 |

This research study was done to undertake a comprehensive study of Peenasa/Pratishyaya Roga (Rhinitis) on ayurvedic and modern principles and to evaluate the clinical effect of Nasya Karma.

Total 30 patients of Peenasa Roga were selected for the trial and divided into 3 groups of 10 patients each.

Patients of group I were administered Nasya with Pathyadi Taila (Bhaishajya Ratnavali 62/29), group II were administered Shringarabhra Rasa (Bhaishajya Ratnavali 14/102-110) 250 mg b.d. with honey orally and group III were administered Shringarabhra Rasa orally 250 mg b.d. along with Nasya with Pathyadi Taila for 21 days.

It was observed that there was statistically significant improvement in some symptoms of Peenasa Roga in group III, group I also showed significant improvement. In group II mild to moderate improvement was seen which was less than the other 2 groups where Nasya Karma was advised.

# काय चिकित्सा – 29

## तमक श्वास में मल्लसिन्दूर एवं यष्टीमधु चूर्ण का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येत्री** : डा. भारती बाँदिल

**निर्देशक** : डा. ओमप्रकाश शर्मा

**सह–निर्देशक** : डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य

**वर्ष** : 2000

तमक श्वास में मल्लसिन्दूर एवं यष्टीमधु चूर्ण का प्रायोगिक अध्ययन करना महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए 20 रोगियों का चयन किया गया और प्रत्येक आतुर को मल्लसिन्दूर (रसतन्त्रसार व सिद्धप्रयोग संग्रह, प्रथम खण्ड) 125 मि.ग्रा. एवं यष्टीमधु चूर्ण 1 ग्राम मात्रा में दिन में 3 बार मधु के साथ 21 दिन तक सेवन करवाया गया ।

चिकित्सोपरान्त 30 प्रतिशत आतुरों में उत्तम लाभ, 55 प्रतिशत आतुरों में मध्यम लाभ तथा 15 प्रतिशत आतुरों में अल्प लाभ रहा । रक्तपरीक्षण के अन्तर्गत सभी आतुरों में Eosinophil, TEC और ESR में न्यूनता पाई गई जो तमक श्वास में लाभ होने का द्योतक है ।

# Kaya Chikitsa - 30

## Conceptual and Clinical evaluation of Rasayana Therapy with special reference to Amalki Rasayana

**Scholar** : Dr. Vishwanath Ankad

**Guide** : Prof. Ajay Kumar Sharma

**Year** : 2000

The main object of present research work is to undertake a clinical and laboratory study of Amalaki Rasayana (Cha.Chi. 1/1/75) for its psychobiological nature of the Rasayana prabhava.

For this trial 30 subjects were registered and divided into 3 groups. 10 subjects belonging to Sthoulya group, 10 subjects belonging to Karshya group and 10 apparently normal subjects termed as Placebo group.

All the patients were given Sanshodhana therapy with Haritkyadi Churna (Cha.Chi. 1/1/25-28) before starting the specific drug. Subjects belonging to Sthoulya and Karshya group were administered Amalaki Rasayana powder 5gm b.d. with luke warm water for 45 days, 10 subjects belonging to Placebo group were given Shankha Bhasma 250mg b.d. with luke warm water for 45 days.

This trial showed that there was tendency to gain weight in krisha patients while tendency to loose body weight in sthula patients. There was a significant reduction in the level of Serum cholesterol, Serum triglyceride, LDL, VLDL and potent increase in the level of HDL.

# Kaya Chikitsa - 31

## Clinical evaluation of Tikta Ksheer Vasti in the management of Sandhigata Vata with special reference to Osteoarthritis

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Kiran Mohite |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 2000 |

This research work is undertaken to evaluate the efficacy of Tikta Ksheer Vasti alone and in combination of drug Panchtikt Ghrita Guggulu in the management of Sandhigata Vata (O.A.) and to draw a hypothesis regarding the mode of action of the drugs used in the trial on scientific basis.

For this study 30 patients of Sandhigata Vata (O.A.) were selected and divided into 3 groups. In group I – Panchtikta Ghrita Guggulu (Bhaishajya Ratnavali 54/233-236) was administered in the dose of 3 gm b.i.d. with lukewarm water for 30 days. In group II - Tikta Ksheer Vasti (Charak Sutra 28/26) was administered for 30 days. While in group III - Tikta Ksheer Vasti and Panchatikta Ghrita Guggulu both were administered for 30 days.

The results proved that merely Shamana therapy in the form of Panchtikta Ghrita Guggulu could not produce significant functional improvement but administration of Sodhana therapy in the form of Tikta Ksheer Vasti produces significant improvement in joint functions.

# काय चिकित्सा – 32

## मूत्रकृच्छ्र में गोक्षुरादि गुग्गुलु का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. हंसराज चौधरी

**निर्देशक** : डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य

**सह–निर्देशक** : डा. दयाशंकर मिश्रा

**वर्ष** : 2001

मूत्रकृच्छ्र व्याधि में गोक्षुरादि गुग्गुलु (शार्ङ्गधरसंहिता म.ख. 7/84–87) का प्रभावात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्‌देश्य है ।

इस शोध कार्य हेतु मूत्रकृच्छ्र के 20 आतुरों का चयन कर गोक्षुरादि गुग्गुलु 2–2 वटी दिन में 3 बार जल के अनुपान से एक माह तक दी गई ।

सभी मूल्यांकनों के आधार पर 20 आतुरों में से चिकित्सा पश्चात् 25 प्रतिशत में उत्तम लाभ, 70 प्रतिशत में मध्यम लाभ व 5 प्रतिशत में अल्प लाभ हुआ ।

# काय चिकित्सा – 33

## मधुमेह रोग पर करीरादि चूर्ण एवं पंचतिक्त निरुह बस्ति की कार्मुकता का चिकित्सात्मक अध्ययन


**अध्येता** : डा. अविनाश कुमार जैन

**निर्देशक** : डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य

**सह–निर्देशक** : डा. ओम प्रकाश शर्मा


**वर्ष** : 2001

मधुमेह रोग की चिकित्सा हेतु कटु, तिक्त, कषाय रस प्रधान व कटु विपाकी द्रव्य उत्तम हैं। ये सभी रस करीरादि चूर्ण (कल्पित) के घटक द्रव्यों में भी पाए जाते हैं। इसी उद्देश्य से शोध कार्य में मधुमेह शमनार्थ करीरादि चूर्ण का एवं स्थूल तथा बलवान रोगियों में संशोधनार्थ पंचतिक्त पंचप्रासृत निरुह बस्ति (च0चि0 8/8) की कार्मुकता का अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध हेतु 30 रोगियों का चयन किया गया । वर्ग 'अ' में चुने गए संशमन योग्य 15 रोगियों में करीरादि चूर्ण (कल्पित, घटक द्रव्य – करीर, हरिद्रा, मामज्जक, मेथी, विजयसार, जम्बु, दारुहरिद्रा ) का 5 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार भोजन पूर्व उष्ण जल अनुपान से 45 दिन तक प्रयोग करवाया गया ।

वर्ग 'ब' में संशमन व संशोधन चिकित्सा हेतु चयन किए गए 15 रोगियों में प्रतिदिन एक बार पंचतिक्त निरुह बस्ति 400 मि.लि. एवं करीरादि चूर्ण का 5 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार भोजन पूर्व उष्ण जल अनुपान से प्रयोग करवाया गया । बस्ति का अधिकतम प्रयोग 30 दिन तक तथा चूर्ण का प्रयोग 45 दिन तक करवाया गया ।

चिकित्सा पश्चात् वर्ग 'अ' के 10 रोगियों (66.67 प्रतिशत) में अल्पलाभ रहा, 3 रोगियों (20 प्रतिशत) में मध्यम लाभ रहा तथा अलाभ केवल 2 रोगियों में पाया गया ।

वर्ग 'ब' के 10 रोगियों में मध्यम लाभ तथा 5 रोगियों में अल्प लाभ पाया गया ।

# Kaya Chikitsa - 34

## Studies on Ageing and Rasayana effect of Ashwagandha in elderly patients

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Santosh Chavan |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 2001 |

This research work aims to undertake the conceptual study on ageing and clinical evaluation of Rasayana prabhava of Ashwgandha (Withania somnifera) based on various scientific parameters in certain elderly persons.

With this objective 30 subjects were registered for the clinical trial and randomly divided into 2 groups of 15 subjects each in Kalaj jara group and Akalaj jara group. All of them were subjected to consume Ashwagandha granules in the dose of 5gm with milk for 3 months.

This treatment induced a statistically significant improvement in the form of improved mental functions, strength of body and skin lusture, confirming the Rasayana prabhava of Ashwagandha.

In addition, anti-ageing effect was also assessed by using Biological Age scale and Activities of Daily Living (ADL) scale. There was statistically significant improvement in most of the factors confirming anti-ageing effect of Rasayana drug, Ashwagandha.

# Kaya Chikitsa - 35

## Clinical evaluation of a Herbomineral compound drug in the management of Hridroga with special reference to Ischaemic Heart Disease

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Ravindra Kumar Sharma |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Shashi Mohan Sharma |
| **Year** | : | 2001 |

The present research work has been done for clinical evaluation of a Herbomineral compound drug in the management of Hridroga with special reference to Ischaemic Heart Disease on various scientific parameters.

The study was conducted on 30 clinically diagnosed patients of I.H.D. and randomly divided into 3 groups of 10 patients in each group. In group I Tab. Diltiazem 30mg t.d.s. daily given as allopathic therapy for 45 days, in group II Herbomineral compound drug (HMC-A) in the dose of 2gm t.d.s. with lukewarm water was given for 45 days as ayurvedic therapy. Main ingredients of this HMC-A drug were purified Guggulu, Mandura Bhasma, Paravata Shakrita and ghan satva of herbal drugs like Punarnava, Trivrit, Haridra, Daruharidra etc. and cow urine. In III group mixed treatment of both the group I & II was given for 45 days.

Symptomatic improvement was significant in group I and highly significant in group II & III.

Improvement in lipid profile was insignificant in group I and significant in group II & III.

Improvement in TMT findings were least significant in group I, significant in group II and highly significant in group III.

# Kaya Chikitsa - 36

## To study the effect of Shirodhara with special reference to Anidra and Chittodvega

**Scholar** : Dr. Reeta Gupta

**Guide** : Prof. Ajay Kumar Sharma

**Year** : 2001

The present research work aims to develop aetiopathogenesis and treatment modalities of Anidra (Insomnia) and Chittodvega (Anxiety Neurosis) on ayurvedic principles on scientific basis and to evaluate the clinical effect of Shirodhara in the management of Anidra (Insomnia) and Chittodvega (Anxiety Neurosis) patients on various scientific parameters.

For this study 20 patients of Anidra (Insomnia) and 20 patients of Chittodvega (Anxiety Neurosis) were registered. In group $A_1$ of Anidra 10 patients were treated with Ksheerdhara and group $A_2$, 10 were treated with Dashmoola Sidha Ksheerdhara. In group $B_1$ of Chittodvega 10 patients were treated with Ksheerdhara and group $B_2$, 10 were treated with Dashmoola Sidha Ksheerdhara. Duration of trial was 3 weeks.

Clinical improvement was 87.15% in group $A_1$ , 93.48% in group $A_2$, 72.36% in group $B_1$ & 83.01% in group $B_2$. Psychological improvement was 55.33% in group $A_1$, 57.1% in group $A_2$, 54.5% in $B_1$ and 57.57% in group $B_2$. Mean percentage of improvement in group $A_1$ was 71.23%, in group $A_2$ 75.29%, in group $B_1$ it was 63.43% and in group $B_2$ was 70.29%.

# Kaya Chikitsa - 37

## A Clinical evaluation of Dashmooladi Ksheer Vasti in the management of Pakshaghata with an Astrological analysis

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Surendra Sony |
| **Guide** | : | Dr. M.K. Shandilya |
| **Co-Guide** | : | Dr. D.S. Mishra |
| | | Dr. Vinod Shastri |
| **Year** | : | 2002 |

This research work was done to evaluate the efficacy of Dashmooladi Ksheer Vasti alone and in combination with Dashmooladi Kwatha for the management of Pakshaghat (Paralysis). Since time immemorial both ayurveda and astrology have constituted a way of life in India. Thus in present research work medicine were administered only at astrologically suitable time of the day. Even the medicinal herb were collected and treated at appropriate time.

For this study 30 patients of Pakshaghat were registered and divided into 3 groups. In group A of 10 patients only 250ml of Dashmooladi Ksheer Vasti [Dashmooladi Kwath (kalpit yoga, ingredients - Dashmool, Bala, Rasna, Erandamool twak, Aswagandha, Shatawari, Kaunch beej, Rohishaghasa, Shana ke beej, Sountha, Krishna mircha, Pippali, Prasarani & Kapot vit - all in equal parts), water, milk] in a modified form (A type of Yapana Vasti as described by Charaka) was given for 30 days by drip method.

In group B Dashmooladi Kwath prepared from 30gm of crude drugs was given orally with honey twice daily for 30 days. In group C Dashmooladi Kwath in oral form and Dashmooladi Ksheer Vasti were administered simultaneously.

Highly significant results were seen in group C followed by group A.

# Kaya Chikitsa - 38

## Comparative study of Vamana and Nasya Karma in the management of Peenasa Vyadhi (Sinusitis)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Sanjay Sukhdeorao Thokal |
| **Guide** | : | Dr. M.K. Shandilya |
| **Co-Guide** | : | Dr. D.S. Mishra |
| **Year** | : | 2002 |

The present research work aims to evaluate the probable aetiopathogenesis and treatment of Peenasa Vyadhi (Sinusitis) and to assess the clinical effect of Vaman Karma as compared to Nasya Karma with Vyaghri Taila & Marichadi Yoga.

For this clinical study total 30 patients of Peenasa Vyadhi were registered and were randomly divided into 3 groups, consisting 10 each. First group was given Shodhana chikitsa in the form of Vamana Karma and Shodhana Nasya with Vyaghri Taila (Bhaishajya Ratnavali 63/30 and Yogratnakar, Nasarog Chikitsa P.N. 326). Second group was given Shodana Nasya with Vyaghri Taila for 7 days followed by Shamana chikitsa i.e. Marichadi Yoga (Yogratnakar, Nasa rog chikitsa P.N. 325) 3gm b.d. with curd and old guda for 7 days during meal. Third group was given only Marichadi Yoga 3gm b.d. for 7 days.

There was significant improvement in the symptoms of anahyate (obstruction in nasa marg) $p<0.001$, praklidyate (wet nose) $p<0.001$ and nasa shosha (dryness of nasal cavity) $p<0.001$. In all the three groups.

In the symptom of aruchi there was significant improvement ($p<0.001$) in Ist group, insignificant improvement in IInd and IIIrd group ($p<0.1$), ($p>0.1$) respectively.

In nasasrava (Rhinorrhoea) symptom there was significant improvement ($p>0.001$) ($p>0.001$) ($p>0.01$) in all three groups.

Ruja significantly improved in 1st group but in 2nd and 3rd group there was insignificant improvement.

In muhurmuhur Pratishyaya Ist and IInd group showed significant results while IIIrd group showed less significant results.

Overall results obtained in 30 patients of Peenasa Vyadhi indicate that although there was considerable symptomatic improvement in the patients treated with Marichadi Yoga alone but the result produced by Vamana Karma and Nasya Karma with Vyaghri Taila along with Marichadi Yoga showed wonderful results.

# Kaya Chikitsa - 39

## A Clinical study of Snehan, Swedan and Rasnadi Guggulu in the management of Sandhigata Vata (O.A.)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Dinesh Kumar Singh |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2002 |

This research work aims to undertake a clinical study on disease Sandhigata Vata vis–a–vis Osteoarthritis & to evaluate the efficacy of Snehan, Swedan and Rasnadi Guggulu clinically in the management of Sandhigata Vata on various scientific parameters.

The clinical trial was done on 30 patients, randomely divided into 3 groups of ten each. In group A Snehan and Swedan was done with Dashmoola Taila (Yoga Ratnakar, Vata Vyadhi Chikitsa) and Kwath for 30 days. In group B Rasnadi Guggulu (Yoga Ratnakar, Vata Vyadhi Chikitsa) 2 tab. (each tab. of 500mg) t.d.s. with luke warm water was given for 30 days. In group C both Snehan, Swedan and Rasnadi Guggulu were administered to the patients for 30 days.

Overall percentage of improvement was 40.31% in group II, 47.1% improvement in group I and 66.93% i.e. maximum improvement was noticed in group III after the trial.

# Kaya Chikitsa - 40

## Clinical evaluation of Narsingh Churna in the management of Amavata (Rheumatoid Arthritis)

**Scholar** : Dr. Sunil S. Borkar

**Guide** : Prof. Ajay Kumar Sharma

**Year** : 2002

This research work has been done to undertake a clinical and psychobiological study on the disease entity Amavata vis-a-vis Rheumatoid Arthritis and to evaluate the clinical effect of popular compound preparation Narsingha Churana.

Total 44 cases suffering from Amavata (R.A.) were selected and randomly divided into two groups. In group A 32 patients were registered and were given Narsingha Churana (Chakradatta 67/15-24) in the dose of 3 gm b.d. with lukewarm water or milk for 30 days along with local dry hot fomentation.

In group B of 12 patients registered were given Glucose powder (in capsule form) in the dose of 5gm b.d. with water for 30 days.

Parameters of assessment were clinical improvement, functional improvement, Total leucocyte count, ESR, Hb% and the result were 56.61%, 6.68%, 10.28%, 24.05%, 1.42% in group A and 0.97%, 0.86%, 8.89%, 14.66%, 0.72% in group B respectively.

# Kaya Chikitsa - 41

## Clinical evaluation of Sthaulyahara Vati and Lekhana Vasti in the management of Sthaulya (Obesity)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Seema Jain Bhadora |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2002 |

This research work aims to undertake a clinical study on the disease entity Sthaulya Roga vis-a-vis Obesity and to evaluate the clinical efficacy of Sthaulyahara Vati and Lekhna Vasti in its management.

For this trial total 30 patients were selected and divided into 3 groups. In group A patients were given Sthaulyahara Vati (Ingredients : Vidanga, Mustaka, Triphala, Pippali, Kutha, Sunthi, Kutaki, Purana Guggulu, Apamarga tandula, Rasanjana, Atisa, Bilva chala, Haridra, Sheelajeeta, Lauha bhasma) 2 gm t.d.s. for 30 days. In group B patients Lekhana Vasti (Su.Chi. 38/81) 450-500 ml was administered for 30 days. While in group C both Sthaulyahara Vati and Lekhana Vasti were administered combinedly for 30 days.

Highly significant results were seen in group C patients followed by group A in comparison to group B patients.

.

# काय चिकित्सा – 42

## वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में क्षीण शुक्र कीट पर विदार्यादि चूर्ण एवं बलादि यापना बस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन

**अध्येता** : डा. मीठा लाल मीणा

**निर्देशक** : डा. महेन्द्र कुमार शाण्डिल्य

**सह–निर्देशक** : डा. ओम प्रकाश शर्मा

**वर्ष** : 2002

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत वाजीकरण के परिप्रेक्ष्य में क्षीण शुक्र पर विदार्यादि चूर्ण एवम् बलादि यापना बस्ति का चिकित्सात्मक अध्ययन किया गया ।

इस शोध कार्य हेतु चयनित 25 आतुरों को दो वर्गों में विभाजित किया गया । वर्ग 'अ' के 15 आतुरों में विदार्यादि चूर्ण (घटक – विदारीकन्द, श्वेत मूसली, शालम पंजा, अश्वगंधा, गोक्षुर तथा अकरकरा) का 3 ग्राम मात्रा में प्रातः, सायं सुखोष्ण दुग्ध अनुपान से 45 दिन तक प्रयोग किया गया । वर्ग 'ब' के 10 आतुरों में बलादि यापना बस्ति (च0सि0 12 / 15 –9) का 500 मि.लि. मात्रा में 30 दिन तक एवम् विदार्यादि चूर्ण का उपरोक्तानुसार प्रयोग किया गया ।

वर्ग 'अ' में शुक्र की मात्रा में औसत लाभ 10.20 प्रतिशत प्राप्त हुआ जबकि वर्ग 'ब' में 40.54 प्रतिशत प्राप्त हुआ । वर्ग 'अ' में शुक्राणुओं की सामान्य गति बढाने में औसत लाभ 94.69 प्रतिशत एवम् वर्ग 'ब' में 50 प्रतिशत प्राप्त हुआ । वर्ग 'अ' में शुक्राणुओं की मंद गति बढाने में औसत लाभ 1.46 प्रतिशत एवं वर्ग 'ब' में 22.06 प्रतिशत प्राप्त हुआ । वर्ग 'अ' में मृत शुक्राणुओं की संख्या कम करने में औसत लाभ 25.80 प्रतिशत एवं वर्ग 'ब' में 25.12 प्रतिशत प्राप्त हुआ । किसी भी आतुर को कोई उपद्रव नहीं हुआ ।

# Kaya Chikitsa - 43

## Clinical study on the role of Tablet Cardiomin (A Herbomineral Ayurvedic Kalpita Yoga) in the management of Ischaemic Heart Disease (Hridroga)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Sandeep Agrawal |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Shashi Mohan Sharma |
| **Year** | : | 2003 |

The present research work has been done for the conceptual evaluation and correlation of Hridroga with Ischaemic Heart Disease on various scientific parameters and the clinical evaluation of the Tablet Cardiomin (A Herbomineral compound) in the management of Ischaemic Heart Disease (Hridroga).

The study was conducted on 20 clinically diagnosed, TMT positive patients of I.H.D. Registered patients were divided into 3 groups. In group I (5 patients) were recommended Tab. Amlodipine 5mg o.d. for 45 days . In group II (10 patients) were recommended Tab. Cardiomin (Ingredients : Guggulu, Mandur bhasma, Paravat Skrita etc.) in the dose of 2gm t.d.s. with lukewarm water for 45 days. In group III (5 patients) both Tab. Amlodipine and Tab. Cardiomin were given simultaneously.

In group I the symptomatic improvement was significant, improvement in lipid profile is insignificant and the TMT findings were mild significant.

In group II the symptomatic improvement was significant, lipid profile improvement was mildly significant and the improvement in TMT findings were significant.

In group III the symptomatic and TMT findings showed improvement which were highly significant while improvement in lipid profile was significant.

# Kaya Chikitsa - 44

## Clinical evalution of the Markandyadi Hima in the management of Kamla with special reference to Viral Hepatitis

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Parshoram Singh Yadav |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Prof. Subhash Nepalia |
| **Year** | : | 2003 |

This research work aims to perform conceptual studies on Kamala Roga vis-à-vis Viral Hepatitis and clinical evaluation of Markandyadi Hima in the management of Kamala Roga with special reference to Viral Hepatitis on various scientific parameters.

For this trial total 30 patients were registered and divided into 3 groups of 10 patients in each group. Group I was recommended allopathic medicine for 21 days. Group II was recommended Markandyadi Hima (Siddha Bhaeshaja Manimala, Pandu Roga Chikitsa/8-9) in the dose of approximately 400ml once daily for 21 days. Group III was recommended both allopathic medicine and Markandyadi Hima for 21 days simultaneously.

Overall results in 30 patients of Viral Hepatitis evaluated on the parameters of general feeling of well being, symptomatic improvement, hematological improvement & biochemical studies. Results revealed improvement in all groups but overall improvement was mild in group I, moderate in group II and maximum in group III after the therapy. It was also observed that duration of illness was shorter in ayurvedic treated group II.

# Kaya Chikitsa - 45

## Clinical evaluation of Kanchnar Guggulu and Pippali Vardhman Rasayana in the management of Hypothyroidism

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Komal Kankran |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Prakash Keshwani |
| **Year** | : | 2003 |

The present research work aims to undertake the conceptual and clinical correlation of Agnimandya with Hypothyroidism and the clinical evaluation of Kanchnara Guggulu and Pippali Vardhman Rasayana in the management of Hypothyroidism on scientific parameters.

30 clinically diagnosed and later confirmed patients of Hypothyroidism were divided randomly into 3 groups. In group I Tab. Thyroxin sodium (Allopathic medicine) in the dose of 1.5-2 µg/kg was given with water for 6 weeks. In group II Tab. Kanchnar Guggulu (Bhaishajya Ratnavali 44/64-69) 2gm b.d. for 6 weeks and Pippali Vardhman Rasayana for 3 weeks simultaneously. In group III mixed treatment of both the group I & II was given for 6 weeks.

From the various observations in clinical symptoms it was clear that all the three groups have shown significant improvement. However the percentage of improvement was mild in group I, moderate in group II and maximum in group III.

The laboratory findings proved that group I & III showed significant improvement in decreasing TSH while in group II it was statistically insignificant.

# Kaya Chikitsa - 46

## Clinical evaluation of efficacy of an Ayurvedic compound in the management of borderline Hyperthyroidism

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Deepika Upadhyaya |
| **Guide** | : | Dr. Mahendra Kumar Shandilya |
| **Co-Guide** | : | Dr. Surendra Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2003 |

The main objective of this clinical study was to understand the basic fundamental concepts of Hyperthyroidism, so that its aetiopathogenesis can be interpreted on ayurvedic lines. For this research study researcher selected a hypothetical formulation.

For this trial 30 patients were selected & divided into 3 groups.

Group A - 10 patients of Hyperthyroidism were included and given antithyroid drug (Neomarcazole) for 2 months.

Group B - 10 patients were administered with ayurvedic compound (Ingredients : Yastimadhu, Guduchi, Sankhapushpi, Satavari and Ashwagandha) in the dose of 1gm b.d. for 2 months.

Group C - 10 patients were administered with both anti thyroid drug (Neomercazole) and ayurvedic compound drug simultaneously for 2 months.

Assessment criteria were clinical improvement, Serum T4, Serum T3, Serum TSH, Serum cholesterol and Hemoglobin. The percentage improvement in group A was 9.76%, 17.24%, 28.80%,44.4%, 0.7%, 0.99% and in group B results were 9.71%, 0.37%, 0.59%, 7.15%, 0.34%, 12.3% and in group C results were 13.39%, 20.57%, 27.42%, 46.94%, 1.28%, 2.5% respectively.

# Kaya Chikitsa - 47

## A Clinical study for evaluation of the efficacy of Dugdha Yoga (An indegenous medicine) in Deaddiction of Opioid dependance

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Anoop Kumar Indoriya |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Co-Guide** | : | Dr. Anil Tambi |
| **Year** | : | 2003 |

This research work has been done to evaluate the efficacy of Dugha Yoga (An indegenous medicine containing Kuchla and Milk) in Deaddiction the Opioid dependence cases and compared its clinical efficacy with allopathic regimen.

Total 30 patients of Opioid dependence were selected and divided into 2 groups. In first group 20 patients were given 5gm Dugdha Yoga 4-6 times a day for first 15 days and then 5gm b.i.d. for next 15 days. While second group 10 patients were given allopathic regimen for 1 month.

35.55% improvement was observed in first group and 40.75% improvement was observed in second group. Withdrawl symptoms severity in Opioid dependence only for 3 days in group 1$^{st}$ but symptoms severity remained for 5 days in group IInd.

# Kaya Chikitsa - 48

## Clinical evaluation of Panchamrita Parpati Kalpa in the management of Grahani Roga with special reference to Ulcerative Colitis

**Scholar** : Dr. Shreesh Mishra

**Guide** : Prof. Ajay Kumar Sharma

**Year** : 2004

The present research work has been carried out with the objective to evaluate the effect of Panchamrita Parpati Kalpa in the management of Grahani Roga w.s.r. to Ulcerative Colitis.

Panchamrita Parpati (Bhaishajya Ratnavali 8/458) has been selected as a trial drug. 30 patients clinically and Radiologically diagnosed cases of Grahani Roga were selected and randomly divided into three groups of 10 patients each.

Group I – patients were given allopathic medicine (Sulphasalazine and Prednisolone) for 40 days. Group II – patients were given Panchamrita Parpati as per Kalpa schedule with takra and jeraka anupan for 40 days and group III - patients were given combination of allopathic and ayurvedic medicine, for 40 days.

The results were highly significant in all the groups with percentage of improvement being 50.17%, 49.73% and 67.68% in I, II and III group respectively. Overall improvement in hematological parameter in all the groups was statistically insignificant.

# Kaya Chikitsa - 49

## Clinical evaluation of Leukod tablet and Leukod ointment (Both Kalpita Yogas) in the management of Switra Roga with special reference to Vitiligo

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Umesh Chandra |
| **Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 2004 |

The present research work was undertaken to screen clinically Leukod ointment and Leuked tablet in the treatment of Switra Roga with special reference to Vitiligo.

30 clinically diagnosed patients of Switra (Vitiligo) were selected and randomly divided in three groups of ten patients each. First group was given Leukod ointment (Ingredients : Bakuchi, Tulsi, Chakramarda, Ankola, Pippali, Daruharidra, Chitrak, Erand, Karanj, Gunja, Tuttha and Harital) twice daily for 3-6 months, after application the patients were advised to expose the affected part to rising and setting Sun.

Second group was given orally Leukod tablet (Ingredients : Ghansatva of - Bakuchi, Katuki, Chitrakmool, Pippali, Neembeeja, Amalki, Lalchandan, Bhringraj, Tamra bhasma, Kasis bhasma and Swarna maksika bhasma) in the dose of 2 tab. (250mg per tab.) t.d.s. with lukewarm water for 3-6 months. Third group was treated with both Leukoid tablet and Leukod ointment.

Overall improvement was 45.0% in group first (Ointment group), 71.8% improvement in second group (Tablet group) and 89.24% improvement in third group. Leukod tablet has shown much better result in patients of Switra Roga in comparison to leukod ointment.

# Kaya Chikitsa - 50

## A comparative Clinical study of Lauha Bhasma and Mandura Lavana with Phalatrikadi Kwatha anupana on Pandu Roga (Anaemia)

**Scholar** : Dr. Girish Narayan Roy

**Guide** : Dr. Mahendra Kumar Sharma

**Year** : 2004

This research work has been done to evaluate the efficacy of Lauha Bhasma and Mandura Lavan with Phalatrikadi Kwath anupana in Pandu Roga (Anaemia). All the drugs have been selected from Pandu Roga prakarana of Yoga Ratnakar.

For this study total 30 patients of Pandu Roga (Anaemia) were selected and divided into 2 groups. First group was administered with Lauha Bhasma 250 mg b.d. with honey and Phalatrikadi Kwath (15ml) daily for 30 days. Second group was given Mandur Lavana 500mg b.d. with honey and Phalatrikadi Kwath anupana for 30 days.

The results were highly significant in both the groups. In first group improvement in Hb% was 55.28% and in ESR was 10.30%, while in second group improvement in Hb% was 58.73% and in ESR was 12.89%.

# Kaya Chikitsa - 51

## Studies on Rasayana Therapy and Antistress effect of Ashwagandha (Withania somnifera)

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Rajesh Kumar |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2004 |

This research work aims to undertake theoretical and clinical study on Rasayana and Stress disorders, simultaneously with the evaluation of efficacy of Ashwagandha in the treatment of Stress disorders.

For this trial total 50 patients suffering from stress in the age group 40-60 years were selected. The drug selected for the trial was Ashwagandha which is stated to possess the Rasayana properties as mentioned in Astanga Hridaya and also in Nighantus like Bhavaprakash Nighantu and Madanpala Nighantu etc. The drug was administered after doing Samshodhana karma of all the patients with Haritakyadi Churna (Cha.Chi. 1/1/25) in dose of 3-5gm at bed time with lukewarm water for 3 to 5 days. After doing Sansarjana karma all the patients were given Ashwagandha Powder in the dose of 5 gm b.d. with lukewarm water for 3 months.

The percentage of improvement in smriti, medha, arogya, prabha, varna, swara, dehabala and indriyabala was 58.10% 10.0%, 74.41%, 8.6%, 6%, 2%, 69.31% and 1% respectively.

The overall improvement in different parameters of assessment was highly significant (i.e. in Rasayana prabhava, antistress effect, physiological, psychological, hematological), while biochemical improvement was not significant after the therapy.

# Kaya Chikitsa - 52

## Comparative Clinical evaluation of Asmonil Ghrita (Kalpit Yoga) and Haridra Khanda in the management of Tamak Shvasa (Bronchial Asthma) w.s.r. to their Anti Histaminic effect

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Shantul Kumar Gupta |
| **Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 2005 |

This research work has been done to evaluate the efficacy of Haridra Khanda and Asmonil Ghrita (Kalpit Yoga) in the management of Tamak Shvasa (Bronchial Asthma) w.s.r. to their Anti Histaminic effect.

Total 30 patients were selected for the trial and randomly divided into three groups.

Group A patients were given Haridra Khanda (Bhaishajya Ratnavali 55/13-17) in the dose of 6-10 gm b.i.d. with lukewarm water. The group B patients were given Asmonil Ghrita (Ingredients - Manahshila, Haritala, Abhraka bhasma, Vasa, Sheerish, Shati, Somlata, Kantakari, Kulanjana, Sunthi, Yasthimadhu, Goghrita) in the dose of 5gm b.i.d with warm godugdha and the group C patients were given both Asmonil Ghrita and Haridra Khanda. Duration of trial was 30 days.

The overall average clinical improvement in subject parameters was 53.62% in group A, 61.52% in group B and 68.88% in group C. In objective parameters, overall average clinical improvement was 7.49% in group A, 11.65% in group B and 16.27% in group C.

# Kaya Chikitsa - 53

## Clinical study of Depressive illness and its Ayurvedic management

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Gaurish Kumar Gupta |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2005 |

This research work aims to undertake clinical study on Depressive illness, simultaneously with the evaluation of efficacy of an ayurvedic preparation Vachadi Churna (Kalpita Yoga) in the treatment of Depressive disorder.

For this study 34 patients of Depressive illness were registered out of which 4 dropped out of study. All the patients were divided into 3 groups of 10 patients each. Group I patients were recommended with Tab. Imipramine Hydrochloride 25mg once only at bed time with lukewarm water as allopathic group. In group II i.e. ayurvedic group Vachadi Churna (Ingredients : Vacha, Jyotishmati and Kapikachchhu equal part) in the dose of 5gm b.i.d. with lukewarm water was given. In group III mixed treatment of both the groups was given. Duration of trial was 2 months.

Clinical improvement seen in group I was 50.27%, in group II was 53.26% and in group III was 62.14%. Psychological improvement was 47.50% in group I, 56.47% in group II and 60.23% in group III.

# Kaya Chikitsa - 54

## Clinical evaluation of the effect of Lekhana Basti in patients of Essential Hypertension and Ischaemic Heart Diseases

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Grandhi Lavanya |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2005 |

Both Hypertension and Hyperlipidemia are major risk factors of CAD and an effective treatment of Hyperlipidaemia improves both. So the present study is mainly concerned with correction of obesity, dyslipidaemias and control of high B.P. with the help of Lekhana Basti.

For this trial 30 clinically diagnosed patients of Essential Hypertension and Ischaemic Heart Disease were registered out of which 6 cases dropped out. Remaining 24 patients were randomly divided into 2 groups containing 12 patients in each group.

Lekhana Basti (consists of all the 10 drugs of lekhaniya dasaimani described by Acharya Charaka) 350-450 ml was given for 8 days. Before giving basti in both the groups Abhyanga with Dasmula Taila and Nadi sweda was recommended for first 7 days.

In both the groups the change in S. cholesterol, S. tryglyceride, LDL-C, VLDL-C are found to be highly significant and significant change also marked in HDL-C.

On the basis of results obtained after clinical trial it was noticed that Lekhana Basti may be used effectively in controlling treating, delaying or reversing the chain of events taking place in the causation of disorders like EH and IHD.

# Kaya Chikitsa - 55

## Management of Stable Angina with an indegenious compound preparation Lashunadi Guggulu

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Sunit Prakash Sharma |
| **Guide** | : | Prof. Ajay Kumar Sharma |
| **Year** | : | 2005 |

The treatment of Stable Angina in modern system of medicine has a limited role and the drugs have serious side effects. Hence this study undertaken to evaluate certain safe and effective herbal drugs for the management of CAD.

This study was conducted on 30 clinically diagnosed and confirmed patients of Stable Angina. These patients were divided into 3 groups. In 1$^{st}$ group of 10 patients Tab. Dilzem 30 mg t.d.s. was given with lukewarm water. In 2nd groups of 10 patients Tab. Lashunadi Guggulu (Ingredients - Lashuna, Puskarmoola and Guggulu) 2gm t.d.s. was given with lukewarm water. In 3rd group of 10 patients Tab. Dilzem 30 mg t.d.s. along with Tab. Lasunadi Guggulu with lukewarm water as mixed therapy was given. Duration of trial was 45 days.

Maximum symptomatic relief (70.67%) was observed in patients of 3rd group, moderate symptomatic relief (61.91%) was observed in patients of 2nd group, whereas comparatively less symptomatic relief (37.00%) was observed in patients of Ist group.

# Kaya Chikitsa - 56

## Role of Laksha Guggulu and Haridradi Lepa in the management of Sandhigata Vata with special reference to Oesteoarthritis

| | | |
|---|---|---|
| **Scholar** | : | Dr. Rakesh Kumar |
| **Guide** | : | Dr. Radhey Shyam Sharma |
| **Year** | : | 2005 |

This research work is carried out with the objectives of a clinical and literary study to evaluate the efficacy of Laksha Guggulu and Haridradi Lepa for the treatment of Sandhigata Vata.

30 patients were selected for this trial and divided into three groups of 10 patients each. Group A was given Laksha Guggulu (Chakradatta 49/14-15) 1gm b.d. with lukewarm water or milk along with Snehana and Swedana. Group B was given Haridradi Lepa (Kalpit, ingredients : Madhu, Lime & Haridra in equal parts) along with Snehana and Swedana. Group C was given combined therapy along with Snehana and Swedana. Duration of trial was 2 months.

Overall percentage of improvement was 45.59% in group B, 46.40% in group A and 60.43% improvement in group C.

Results were found highly significant in combined group C where relief in pain and tenderness was 62.50% and 60.87% respectively. Improvement in stiffness of joints, walking distance, oedema of joints and restriction of joint movement was observed 59.09%, 54.55%, 71.43% and 54.17% respectively.